मधुवन ओम् शान्ति अंक 250 मई 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(07-04-13)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मातपिता बापदादा की अति लाडली, सदा सब प्रश्नों से पार प्रसन्नचित रहने वाली, सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न, निश्चय और भावना के आधार पर विजय और सफलता का अनुभव करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी

बाद समाचार - मधुबन की मनभावन सर्व शक्तियों, सर्व खजानों से सम्पन्न बनाने वाली इस वन्डरफुल अव्यक्त मिलन की सीज़न में देश विदेश के हजारों बाबा के बच्चे खूब रिफ्रेश हो, वरदानों से भरपूर हो अपने-अपने सेवास्थान पर गये। मीठे बाबा ने अगली सीजन के लिए भी बहुत अच्छा होमवर्क दे दिया। अब तो बाबा हम बच्चों से अव्यक्त पालना का रिटर्न निर्विघ्न स्थिति, निर्विघ्न सेवा के रूप में देखना चाहते हैं।

इस बार मीठे बाबा ने सभी से 3-4 बातों की प्रामिस कराते हुए यही स्लोगन दिया है कि (1) सदा खुश रहना और खुशी बांटना। (2) शुभ भावना शुभ कामना रख निर्विघ्न ज़ोन/ निर्विघ्न सेवाकेन्द्र बनाना। (3) जो भी कमी-कमजोरियां हैं, उन्हें सदा के लिए परिवर्तन कर अन्तिम समय को समीप लाना। (4) संगम के खजाने को जरा भी व्यर्थ नहीं जाने देना। बापदादा चाहते हैं कि अगली सीजन में ऐसे निर्विघ्न, दिलपसन्द बच्चों की सभा हो। तो जरूर हम सब अपनी प्रैक्टिकल जीवन द्वारा बाबा को इसका रेसपान्ड देंगे।

हम बाबा के लाखों बच्चे हैं, बाबा की सभी बच्चों प्रति यही प्रेरणा है कि आप बच्चों का खुशनुमा चेहरा देख लोगों का दु:ख चला जाए, सब खुशी में आ जाएं। तो बोलो, सदा खुश रहने और खुशी बांटने का प्लैन टच हो रहा है ना! ऐसे नहीं मैं तो खुश हूँ लेकिन मेरे से भी सब खुश हों, इस पर जरूर ध्यान देना है। इसके लिए इगोलेस, वाइसलेस बनना होगा। सच्चाई और नम्रता के आगे इगो का वश नहीं चल सकता। अगर कोई भी बात आयेगी तो शुभ भावना, शुभ कामना रखने से, मधुर व्यवहार से चली जायेगी। दुनिया में तो मनुष्य शान्ति ढूंढते हैं, यहाँ शान्ति के पहले खुशी बहुत है। शान्ति, खुशी और प्रेम वायुमण्डल को इतना पावरफुल बना देता है जो भगवान भी कहता है वाह बच्चे वाह! इस बार बाबा ने कितनी बार बच्चों की वाह वाह की, मैंने कहा हम बच्चों को भी ज़ोर से कहना चाहिए वाह बाबा वाह! मीठे बाबा ने हम बच्चों की बुद्धि को कितना काम लायक बनाया है, सिर्फ अब मैं-पन वाली बुद्धि से काम नहीं लेना है। सदा रूहानियत की मौज में रहना है, कभी मूंझना नहीं है। बातें तो आयेंगी, चली जायेंगी। ऐसे कभी नहीं कहो यह नहीं होना चाहिए, ऐसे क्यों होता है... यह संकल्प भी खुशी को खत्म कर देते हैं। समय अनुसार हर एक के पार्ट को साक्षी होकर देखने से ही खुश रह सकते हैं।

यह भी बहुत-बहुत खुशी की बात है जो संगम पर हमारा समय, संकल्प, सम्पत्ति सब सफल हो रहा है। ध्यान है कि एक कौड़ी भी, एक मिनट भी निष्फल न जाये। यह बहुत वैल्युबुल है। भले और कुछ भी करना नहीं आता है सिर्फ सी फादर, फॉलो फादर, इसी से हम लास्ट सो फास्ट जा सकते हैं। इकॉनामी, एकनामी, एकाग्रता और एकता की कमाल है। इकॉनामी भी अच्छी तरह से की है, अनाज का एक दाना भी व्यर्थ न जाये। एक-एक दाना कीमती है। जिसका खाते हैं उसका गुण गाते हैं, जिससे प्यार है वही नज़रों में दिखाई देता है। बोलो, आप सबका भी यही अनुभव है ना!

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद ....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

अपने स्वभाव को सरल और सहनशील बनाओ

1) भोलानाथ बाप को सबसे प्रिय भोले बच्चे हैं। भोले अर्थात् सदा सरल स्वभाव, शुभ भाव और स्वच्छता सम्पन्न मन वाले। भोलानाथ बाप ऐसे सरल स्वभाव वाले भोले बच्चों के गुणों की माला सदा ही सिमरण करते हैं। तो जितना ज्ञान स्वरुप, नॉलेजफुल, पावरफुल उतना ही भोलापन।

2) जो भी कार्य करते हो, हर कार्य में तीन बातें चेक करो - सभी प्रकार से सरलता भी हो, सहनशीलता भी हो और श्रेष्ठता भी हो। साधारणता को श्रेष्ठता में बदली करो और हर कार्य में सहनशीलता को सामने रखो और अपने चेहरे पर, वाणी पर सरलता को धारण करो तब सर्विस में सफलता वा श्रेष्ठता अनुभव होगी।

3) जो स्वयं सरलचित रहता है वह दूसरों को भी सरलचित बना सकता है। सरलचित माना जो बात सुनी, देखी, की, वह सार-युक्त हो और सार को ही उठाये और जो बात वा कर्म स्वयं करे उसमें भी सार भरा हुआ हो। इससे अपना पुरुषार्थ भी सरल होगा और वह दूसरों को भी सरल पुरुषार्थी बना देगा। सरल पुरुषार्थी सब बातों में आलराउन्डर होगा। उसमें कोई भी बात की कमी दिखाई नहीं देगी।

4) कोई भी कार्य में सफलता का आधार - सहनशीलता और सरलता है। जैसे कोई धैर्यता वाला मनुष्य सोच समझकर कार्य करता है तो सफलता प्राप्त होती है। वैसे ही जो सहनशील होते हैं वह अपनी ही सहनशीलता की शक्ति से कैसे भी कठोर संस्कार वाले को शीतल और कैसे भी कठिन कार्य को सरल बना देते हैं।

5) देवताओं की सूरत में सरलता ज़रूर दिखाते हैं। फीचर्स में सरलता, जिसको आप भोलापन कहते हो। जितना जो सहज पुरुषार्थी होगा वह मन्सा में भी सरल, वाचा में भी सरल, कर्म में भी सरल होगा, इसको ही फरिश्ता कहते हैं।

6) सदा स्मृति रहे कि मैं मास्टर विश्व-निर्माता हूँ। सदा निर्माण का कार्य करने के लिए निर्मानता अर्थात् सरलता का गुण नेचरल रूप में होना चाहिए। जहाँ सरलता है वहाँ अन्य गुण भी स्वतः आ जाते हैं। तो सदैव इस स्मृति स्वरूप में स्थित रह फिर हर संकल्प वा कर्म करो। जब अपने को मास्टर विश्व-निर्माता समझेंगे तब यह माया के छोटे-छोटे विघ्न बच्चों के खेल समान लगेंगे।

7) जितना सरलचित उतना ही सहनशील बनो। सरलता के साथ अगर समाने और सहन करने की शक्ति नहीं तो सरलता बहुत भोला रूप धारण कर लेती है और कहाँ-कहाँ भोलापन बहुत भारी नुकसान कर देता है। तो ऐसा सरलचित नहीं बनना।

8) हर संकल्प, हर बोल में विशेषता हो। सदा सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म हों, ऐसे सरल स्वरुप रहो। सदा एक की मत पर, एक से सर्व सम्बन्ध एक से सर्व प्राप्ति, ऐसे एक द्वारा सदा एकरस रहने के सहज अभ्यासी रहो। सदा खुश रहो, खुशी का खजाना बांटो। खुशी की लहर सर्व में फैलाओ, यही सच्ची सेवा है।

9) अपनी नेचर को सरल बनाना है तो अपनी वा दूसरे की बीती को नहीं देखना। सरलचित नेचर होगी तो मधुरता का गुण स्वतः आ जायेगा। नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगी। मुख से कभी कटुवचन नहीं निकलेंगे।

10) किसके संस्कार सरल, मधुर होते हैं तो वह संस्कार स्वरूप में आते हैं। जब संस्कार बापदादा के समान बन जायेंगे तो बापदादा के स्वरूप सभी को देखने में आयेंगे। जैसे बापदादा वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प अनुभव होंगे। सभी के मुख से निकलेगा यह तो वही लगते हैं।

11) अभी-अभी आवाज में, अभी-अभी आवाज़ से परे, जितना यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा उतना सम्पूर्णता समीप दिखाई देगी। सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है - सर्व पुरुषार्थ सरल होगा। याद की यात्रा, सर्विस दोनों ही पुरुषार्थ में आ जाते हैं। जब दोनों में सरल अनुभव हो तब समझो सम्पूर्णता की अवस्था प्राप्त होने वाली है।

12) मन, वाणी, कर्म से सरलता और सहनशीलता, यह दोनों आवश्यक हैं। अगर सरलता है, सहनशीलता नहीं तो भी श्रेष्ठ नहीं। सरलता के साथ सहनशीलता है तो शक्ति स्वरुप कहा जाता है। शक्तियों में सरलता और सहनशीलता दोनों ही गुण दिखाते हैं। अभी की रिजल्ट में कहाँ सहनशीलता अधिक है, कहाँ सरलता अधिक है। अब इन दोनों को समान बनाओ।

13) जितना जो स्वयं सरल होंगे उतना याद भी सरल रहेगी। जितना जो हर बात में स्पष्ट अर्थात् साफ होगा उतना सरल होगा। जो जैसा स्वयं होता है वैसे ही उनकी रचना में भी वही संस्कार होते हैं। तो हर गुण के प्रैक्टिकल स्वरुप एक्जैम्पल बनो।

14) बापदादा को सबसे प्यारे साफ दिल वाले बच्चे हैं। साफ दिल सदा बापदादा के दिल तख्तनशीन हैं। वे वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सरल और स्पष्ट एक समान दिखाई देते हैं। **सरलता की निशानी है - दिल, दिमाग, बोल एक समान।** दिल में एक, बोल में दूसरा - यह सरलता की निशानी नहीं है। सरल स्वभाव वाले सदा निर्माणचित, निरहंकारी, निर-स्वार्थी होते हैं। वे सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि वाले होते हैं।

15) संस्कार मिलन का आधार है एक-दो में फेथ, रिस्पेक्ट और सरल नेचर। जैसे काई की विशेष नेचर होती है, उस नेचर के वश न चाहते भी चलते रहते हैं। कहते हैं चाहती नहीं हूँ लेकिन मेरी यह नेचर है। ऐसे आप बच्चों की सरल नेचर हो जो सबको अनुभव हो कि यह सहज योगी, स्वत: योगी हैं। क्या करूँ, कैसे योग लगाऊं .. यह बातें खत्म। हैं ही सदा सहयोगी अर्थात् योगी। इसी एक बात को नेचर और नैचुरल करने से सभी सबजेक्ट में परफेक्ट हो जायेंगे।

शिवबाबा याद है ? 25-01-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

“याद के साथ सेवा हो तो एक भी संकल्प निष्फल नहीं हो सकता”

(दादी जानकी)

सतयुग का राज्य पद वहाँ मिलेगा पर उसकी खुशी यहाँ मिल रही है, तो कभी कोई बात की चिंता करने की जरुरत ही नहीं रहती। कराने वाला बाबा बैठा है, हमको सिर्फ एक्युरेट, एलर्ट और एवररेडी रहना है, आलराउण्डर बनना है। देखा जाए तो हम सबमें कमी एक है, विशेषतायें बहुत हैं और अगर कोई औरों की कमजोरी देखने में बिजी हैं तो अपनी विशेषतायें भी दिखाई नहीं देती हैं। ऐसी लेन देन करने के लिये स्पेशल टाइम तो देना होगा तब तो मालूम पड़ेगा कि मेरे में यह कमी है। फिर कमी देख निराश नहीं होना पर रियलाइज़ करके समझदार बन सच्ची दिल से बाबा को सुनाओ तो बाबा सुनते ही हमारी कमियों को खत्म कर देगा, यह मेरा पर्सनल अनुभव है। तो हरेक देखे कि मेरे में क्या कमी है फिर उसे निकालो, मेरी इस भावना को बाबा पूर्ण कर रहा है, करेगा। अन्त मते सो गति, एक बाबा ही याद आवे तो बाबा गिफ्ट देता है। सेवा करेंगे पर याद नहीं होगी तो समय, संकल्प सफल नहीं होगा इसलिए याद के साथ सेवा हो तो एक भी संकल्प निष्फल नहीं हो सकता है। बाबा की यह आश अब पूरा करो। जब स्वयं ऐसा सुखमय बनेंगे तब तो ऐसा संसार बनायेंगे। इसके लिये उठते-बैठते, चलते-फिरते कभी साधारणता में नहीं आओ, क्योंकि थोड़ा भी साधारण कभी भी व्यर्थ में लेकर जायेगा।

कोई भी बात के लिये यह होना चाहिए, ऐसा होना चाहिए उनसे मुक्त। सूक्ष्म मैं का अभिमान और मेरे से अटैचमेंट न हो। चेंज होना है तो चेक करना पड़ेगा। इसके लिये भी याद में रहना होगा, याद करना माना हर समय चेंज होने के लिये चेक करना। आजकल जैसे कर्मों की गति गुह्य है, कोई भी ऐसे उल्टा कर्म करने से शरीर द्वारा भोगना पड़ता है, क्योंकि कर्म शरीर से हुआ है शरीर को कुछ हुआ तो भी याद करेंगे बाबा को। परन्तु आजकल सूक्ष्म संकल्प में किसके लिए ग्लानि है, किसके लिये प्रभाव है, इसकी भोगना बहुत कड़ी है। याद में खलल पड़ेगा माना बाबा की सच्ची याद नहीं आयेगी। तो यह बड़ी भूल है कि किसी को ग्लानि की दृष्टि से देखना या सोचना। ऐसी रियलाइजेशन हो तो बाप और वर्से के बिगर कुछ याद आता नहीं है। याद में रहो मुक्ति और फिर सेवा में रहो जीवनमुक्ति। तो इतना अन्दर से अटेंशन रखने से चेकिंग अच्छी हो जाती है तो परिवर्तन में परिपक्वता आती है।

समझो हमसे कुछ अच्छा कार्य हुआ तो यह अच्छा बाबा करा रहा है, मैं नहीं कर रही हूँ इसके रिटर्न में बाबा की बहुत शक्ति मिलती है। बाबा जो करा रहा है, बहुत अच्छा है, मेरा भाग्य है। अच्छे कर्म करने की हॉबी हो गयी है। साकार बाबा को, दादियों को देख हमको भी ऐसा बनने की प्रेरणा मिली है। उन जैसा कर्म मैं करुँगी तो मुझे देख और करेंगे। सिर्फ कथनी से सेवा नहीं हुई है, करनी को देख सेवा की वृद्धि हुई है। चार्ट,

पोतामेल, रजिस्टर में सच्चाई से बाबा बहुत खुश होता है। कोई बात अन्दर में न जाये तब कहेंगे कमाल। जिसके दिल में कुछ और है वो दिलवाला के मन्दिर में बैठने लायक नहीं है।

हरेक का पार्ट अपना अपना है, एक का पार्ट न मिले दूसरे से। हमारा पार्ट अपना, आपका पार्ट अपना। तो किसकी बात क्यों याद रखें! इसमें हमें बाप समान बनने के लिए हठ करना है।

27-1-12

"भगवान की आशीर्वाद पाना है तो लायक बनो, उमंग-उत्साह कभी कम न हो" (दादी जानकी)

जो ज्ञान के कोई राज़ को नहीं जानता है वो नाराज़ हो जाता है। तो सभी खुश राज़ी हैं? बाबा ने हमको होमवर्क ऐसा दिया है, जो बाबा की हमारे में आशायें हैं उसे दो महीने में पूरा करना है।

यह उमंग-उत्साह किसमें होगा? जिसको बाबा की आशीर्वाद होगी। आशीर्वाद किसे मिलेगी? हिम्मते बच्चे मददे बाप से आशीर्वाद मिलेगी। उससे अनेक काम सहज हो रहे हैं। कभी यह शब्द नहीं निकल सकता है कि कैसे काम होगा। हिम्मते बच्चे मददे बाप से बन्धनमुक्त हो जाते हैं। अगर हमारे पास धन नहीं है, तन भी ठीक नहीं है, पढ़े-लिखे नहीं हैं, तो बाबा कहेगा बच्चे कोई बात नहीं, उमंग-उत्साह तो हैं ना! बाबा काम खुद करता है और नाम बच्चे का लेता है। बाबा के बोल बच्ची काम हो जायेगा। जब से बाबा ने बोला तब से हमेशा याद रहता है कि हो जायेगा। कैसे होगा! कभी यह नहीं कहो। न मैं, न मेरा। मैं का अभिमान, मेरे में ममता-मोह, बाबा का अच्छा बच्चा बनने नहीं देगा। पर अपने लिए अन्दर से भावना हो कि मैं बाबा का अच्छा बच्चा बनूँ। मम्मा जैसा, दादी जैसा बनना है। ख्याल करेंगे तो बाबा बना देगा।

हमारे अन्दर व्यर्थ संकल्प भी न आवें। व्यर्थ संकल्प कैसे आते हैं, कितना टाइम वेस्ट करते हैं - कभी ख्याल किया है! वह फिर समर्थ संकल्प आने नहीं देते हैं इसलिए संकल्प, वाणी और कर्म। कर्म के बिगर रह भी नहीं सकते। अच्छे कर्म करते रहेंगे तो अच्छे मजबूत बन जायेंगे, इसमें बाबा का आशीर्वाद और हमारा उमंग-उत्साह दस गुना काम करा देता है। आशीर्वाद की गहराई में जाओ, सूक्ष्म में और कोई डाउट नहीं है तो आशीर्वाद मिलेगी। इतने सब काम बाबा आपेही निमित्त बने हुए से करा लेता है। जो निमित्त बने हुए हैं, उनको पूछो तो यही कहेंगे बाबा की आशीर्वाद है, मैंने नहीं किया। उनको आशीर्वाद दी मुझे नहीं दी - यह क्वेश्चन नहीं करो। लायक बनो माना वो योग्यतायें हमारे में आयें जो आशीर्वाद मिले।

तुम्हारे में अगर लव है तो तुम्हारी वैल्यू बढ़ जायेगी। अगर देने वाला दाता बनने की भावना है तो वैल्यू बढ़ जायेगी। मांगने के बजाए देते जाओ। इसके लिए मुख से 'चाहिए' शब्द नहीं निकलने चाहिए। एक तो संसार में यह चाहिए, यह चाहिए। दूसरा, मैं बहुत नहीं मांगती हूँ लेकिन मान तो चाहिए। जब तक चाहिए शब्द मुख से या मन से निकलता है तब तक बाबा से जो मिल रहा है वो नहीं ले रही हूँ, और-और मांग रहीं हूँ। चाहिए शब्द लेने से रोक रहा है। तीसरा चाहिए, इसको यह नहीं करना चाहिए, उसको यह नहीं करना चाहिए। अब इन तीनों 'चाहिए' से मुक्त हो जाओ।

जो सच्चाई और प्रेम से व्यवहार करता है उसके पास आशीर्वाद का भण्डारा भरपूर है। आशीर्वाद बाबा देगा, मैं शुभ भावना दूंगी कि बाबा ने जो इतना अच्छा पढ़ाया है, आप भी यह अच्छी पढ़ाई पढ़ो। मुरली प्यार से पढ़ो, माना जिससे प्यार होता है उससे जुदा हो नहीं सकते। जहाँ मुरली-बाबा है वहीं मेरा मधुबन है।

आशीर्वाद बाबा से लेने योग्य बनना - यह मेरा काम है। रियलाइज़ करो कि चाहिए में कितना नुकसान है। किसकी कम्प्लेन नहीं करो, फिर कहेंगे कम्प्लेन नहीं करती हूँ लेकिन जो बात है, जो देखा है वो सुनाती हूँ। ऐसी स्थिति बनाओ जो तेरी स्थिति देख कम्पलीट बनने की धुन लग जाये। तो अन्दर का आवाज भावना वाला हो। तो भावना पहुंचती है।

कईयों के कर्म प्रेजेन्ट समय ऐसे हैं जो आशीर्वाद जो मिली हुई भी पता नहीं कहाँ चली जाती है। परचिन्तन में कोई बात अन्दर ले ली या अपने में विश्वास कम हो गया। अगर एक

भी भूल हो गई तो फौरन अपने को क्षमा करो। चलो भूल हो गई, मैं महसूस करूँ यह नहीं होनी चाहिए। भूल में भूल शुरू कर दी तो आशीर्वादों का भण्डारा खाली हो जायेगा। ईश्वर स्वयं हमारे पर राज़ी हो। वह स्वयं धर्मराज है वो मेरा बाप है, कोई घड़ी आयेगी जो बाप का पार्ट पूरा होके धर्मराज का पार्ट शुरू हो जायेगा। यह नहीं समझो कि धर्मराज का पार्ट अन्त में होगा। अभी भी धर्मराज का पार्ट है। अगर हम यह नहीं समझेंगे तो वो खुशी नहीं होगी। बाप, शिक्षक, सतगुरु, धर्मराज सभी इसी समय है। वैसे तो बाप दया, प्रेम क्षमा का सागर है क्योंकि रहमदिल है ना। बच्चे कहाँ जायेंगे, मेरे ही तो बच्चे हैं। भोले-भाले बनके किसी उल्टे संग में न जायें। बाबा का हमसे इतना प्यार है। तो बाबा क्या है, क्या करता है वो हमें सबको दिखाना है। बाकी न तन मेरा, न धन मेरा, न मन मेरा। शरीर में आत्मा बैठी है और कह रही है तन तू मेरा नहीं है, तो बिचारे को दु:ख नहीं होगा! सोचो कभी! मैंने कहा मन की शान्ति चाहिए। इसी तन में बैठे मन की शान्ति चाहिए। तो भगवान ने क्या कहा! मन को शान्ति तभी आयेगी जब तन को, धन को मेरा न समझे। और मन मनाभव। तन में बैठे मन में बात लग गयी तो मन खुश है, बिचारे को तकलीफ नहीं है। परमात्मा के लिए प्यार आ गया, बुद्धि ठिकाने पर आ गई, भटकना छोड़ दिया - ऐसा मेरा बाबा है अपने को समझाओ ना। जब मेरा समझेंगे तो मन दु:खी हो जायेगा, शान्त नहीं रहेगा।

अन्तिम जन्म है, आत्मा परमात्मा से बिछड़ी है। इस तन में बैठे आत्मा परमात्मा से मिलन मना रही है। बिचारा मन फंसा हुआ था, वो मुक्ति को पाया है फिर जीवनमुक्ति में रहता है। जीवन में है पर मुक्त है। बाबा बातें सिर्फ सुनाता नहीं है, ऐसा प्रैक्टिकली बनाता है। पहले अन्तर्मुखी फिर एकाग्र, एकाग्रता से बाबा याद आता है और कोई बात याद नहीं रहती है।

ड्रामा एक्यूरेट है जो हो रहा है उसमें कल्याण है, संगमयुग कल्याणकारी है, यह सब प्रैक्टिकल है ना। फिर इसमें और क्या सोचना है! सोचना वो है जो मुझे करना है। एक्स्ट्रा नहीं सोचना है। टाइम की वैल्यु रखें ना। अच्छा।

31-1-12

''बाबा के प्यार में ऐसे कुर्बान जाना है जो इगो, अटैचमेन्ट का अंशमात्र भी न रहे'' (दादी जानकी)

मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। बाबा कैसे अपनी नज़रों से निहाल करके हमें पढ़ा रहा है। पढाने के साथ पालना भी अच्छी दी है। बच्चे, बच्चे कहकर माया से बचा दिया। माया इतनी कड़ी है, जो भगवान का बनने नहीं देती है। भगवान ने अपना बनाकर माया से दूर कर दिया। अभी मुक्ति और जीवनमुक्ति दोनों वर्से बाबा से मिले हैं। पहले जीवनबंध से मुक्ति मिली, कोई कहाँ भी इगो, अटैचमेंट का अंशमात्र भी न रहे, इसके लिए बाबा रोज़ नई नई बातें सुनाता है।

हमारे दिल में बाबा के लिए कितना प्यार है! प्यार में हम कुर्बान गये हैं। सिर्फ मुख से कहते नहीं हैं कुर्बान जाऊं, बलिहार जाऊं, लेकिन बलि चढ़कर, बलिहार हो गये हैं। अभी सोचने का समय है ही नहीं। हम सब आपस में गोप गोपियां हैं, ब्रह्माकुमार-कुमारी तो ढेर हो गये हैं, यह तो बढ़ते जायेंगे। ब्रह्माकुमारों ने ब्रहिनों को आगे रखा, जमाना ऐसा था जो भाई, बहिनों को आगे रखने वाले नहीं थे। बाबा ने इतनी कुमारियों, माताओं को आगे किया। गऊ मातायें हैं। हमारा बाबा कन्हैया भी है, तो गऊपाल, गोबिन्द भी है। तो ऐसे बाबा के हम बच्चे हैं, तो दिल से निकलता है मेरा बाबा, एक तो मैं आत्मा देह, देह के सम्बन्धों में फंसी हुई थी, कहाँ जायें, अपने को अकेला आत्मा कैसे समझें। तो परमात्मा बाप ने सर्व संबंधों से अपना बना लिया। वह बाप भी है शिक्षक, सतगुरू, सखा भी है। भगवान कहते हैं तो याद करने में मेहनत करनी पड़ती, लेकिन वह हमारा सखा है तो याद सहज हो जाती है। तुम मात पिता हम बालक तेरे... तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे... उससे सुख पाया है। वह हमारा शिक्षक है, सतगुरू है। शिक्षायें इतनी अच्छी देता है, सवेरे माँ रूप से जगाता है, बाप रूप से सैर कराता है, फिर शिक्षक रूप में पढ़ाता है। तो बाप, शिक्षक, सतगुरू तीनों इकट्ठे हो गये हैं। फिर धर्मराज भी हैं इसलिए सावधान रहना है। कुछ भी भूल चूक रह जायेगी तो फिर प्यार नहीं करेगा। कहेगा जो किया वह लो। अभी तो प्यार से धुन लगाई है बच्चे बाप समान

बन जाओ, ऊंच पद पा लो।

आज अमृतवेले यह फीलिंग आ रही थी, महात्मा गांधी सवेरे-सवेरे बहुत प्यार से प्रार्थना करते थे, रघुपति राघव राजाराम, पतित-पावन सीताराम, आज हम उसी पतित-पावन बाप के सामने पावन बनने के लिए बैठे हैं। वह हमें पावन कैसे बना रहा है? लक्ष्य सोप दिया है। अच्छी तरह से आत्मा की धुलाई करो, स्वच्छ, पावन बन जाओ। पतित-पावन बाप ने गोद बिठाया है, अमृत पिलाया है फिर कहता है तुम मेरे नूरे रत्न हो। मेरे नूर में कौन, भगवान के नूर में कौन! भगवान की दिल में बच्चे, बच्चों की दिल में बाबा। बाबा ने दिल में नयनों द्वारा बिठा दिया। दृष्टि दी, महावाक्य सुनाये बच्चे बन गये।

जिन्होंने साकार में बाबा की पालना ली है, उन्हें पता है दृष्टि से कैसे अशरीरी बन गये। दृष्टि मिली मर गये। फिर बच्चे बन गये, इसमें गर्भ से पास नहीं होना पड़ता। सेकण्ड में मरजीवा। वहाँ से मरे यहाँ बच्चे बन गयें। बाबा कितना चतुर है सबको कहता है बच्चे पैदा करना बंद करो और वह अव्यक्त होकर भी बच्चे पैदा कर रहा है। कितने बच्चे हो गये हैं। बाबा बच्चे पैदा करता रहता है और हमें कहता है इन्हें ऐसा सम्भालो जो इनको यह फील न हो कि हमारा साकार में बाप नहीं है। तो सबको ऐसी पालना मिले जो लायक बनें। वैसे कोई सारी उम्र नहीं पढ़ते हैं, यहाँ तो मरने तक पढ़ना है। फिर सतयुग में यह पढ़ाई याद भी नहीं होगी। अभी आत्मा शरीर में है तो और कोई याद न आये, सिर्फ पढ़ाई याद आये। वही चिंतन में हो, दिल में हो। अच्छा। ओम् शान्ति।

02-03-13

डबल विदेशी भाई-बहनों के प्रश्न - दादी गुल्जार जी के उत्तर

प्रश्न:- आप जब साकार में बाबा के सामने आते थे तो बाबा आपको देखके बहुत खुश होते थे, बहुत प्यार करते थे जैसेकि जितना भी बाबा आपके लिए करे उतना कम है, तो हमको भी यह प्रश्न मन में उठा और हमको दिल में यह आश हुई कि अगर बाबा हमको अभी देखते इतने सारे विदेशियों को बाबा याद करते थे कि बाबा के बच्चे सारे विश्व भर से आयेंगे लेकिन बाबा ने साकार में देखा नहीं कि इतने सारे बाबा के बच्चे आये, अगर बाबा सभा में अभी होता तो बाबा क्या कहता और क्या करता?

उत्तर:- बाबा अभी भी आपके दिल में समाया हुआ तो है। आपके दिल में बाबा है और बाबा के दिल में आप हो। तो बाबा अपने दिल में समाते हुए एक एक को बहुत प्यार करता और एक एक को अपने दिल में समा देता क्योंकि सबसे प्यार की निशानी है दिल का प्यार, तो यहाँ दिल का प्यार तो छोड़ो लेकिन बाबा हर एक बच्चे को जो योग्य है उन्हों को दिल में समाके रखता है, इतना प्यार बाबा का हर बच्चे से है। इतने सबको गोदी में तो एक बाबा कैसे बिठा सकता, लेकिन एक एक को नयनों का प्यार ऐसा देता जो हरेक अनुभव करे कि मेरे को बाबा ने दिल में समाया है और प्यार किया है। वह तो अभी भी आप अनुभव कर रहे हो। बाबा की बांहें अपने गले में अनुभव करो।

प्रश्न:- ब्रह्मा बाबा की विशेषतायें सुनते हैं तो ऐसे लगता है जैसेकि बाबा ने कुछ पुरुषार्थ ही नहीं किया, जैसे बाबा थे ही सम्पन्न और सम्पूर्ण, तो आपने कभी बाबा को पुरुषार्थ करते हुए देखा?

उत्तर:- बाबा हम बच्चों को जो पुरुषार्थ कराते थे उसमें ही बाबा का पुरुषार्थ समाया हुआ था क्योंकि बाबा के सामने हमेशा हम बच्चे थे। तो जब भी बाबा, शिवबाबा को प्यार करता तो हम बच्चे भी बाबा को याद आते इसीलिए बाबा खुद तो प्यार करता लेकिन ऐसा ही अनुभव था कि यह एक एक बच्चा जो है वो भी बाबा का प्यार अनुभव करे। बाबा जो चाहता है वो हर एक बच्चा करे। तो बाबा हमेशा हर बच्चे से भी यही आशायें रखता तो जितना मेरा प्यार, शिवबाबा से है, उतना ही हरेक बच्चे का प्यार शिवबाबा से हो और फिर ब्रह्माबाबा से भी हो।

प्रश्न:- तो दादी ऐसा कहेंगे पुरुषार्थ जैसी कोई चीज़ वास्तव में है ही नहीं, सिर्फ प्यार ही करना...

उत्तर:- प्यार से पुरुषार्थ ऐसे लगता है जैसे कुछ किया नहीं क्योंकि प्यार में समाया हुआ रहता था, कोई भी मुरली आप देखो जिससे प्यार होता है उसको बार-बार याद किया जाता है। तो बाबा कितने प्यार से मुरली में बार-बार बाबा बाबा कहता है। इसका मतलब क्या हुआ? इतना प्यार बाबा के दिल में है, जो हमको भी बाबा कह करके याद दिलाता है।

प्रश्न:- इसका मतलब यह कहेंगे कि हमारे में प्यार की कमी है इसलिए पुरुषार्थ, पुरुषार्थ लगता है? ऐसे लगता है हमको यह भी करना है, वो भी करना है...।

उत्तर:- पुरुषार्थ तो हमेशा सहज लगना चाहिए, मुश्किल नहीं लगना चाहिए क्योंकि प्राप्ति को सामने देखो। एक जन्म में थोड़ा पुरुषार्थ करते फिर 21 जन्म कुछ नहीं करना पड़ेगा। एक जन्म में 21 जन्म की प्राप्ति फाइनल है, तो इतना प्यार इतनी प्राप्ति तो कभी सुनी भी नहीं। ओम् शान्ति कहने में ही बाबा का एक एक बच्चे से प्यार दिखाई देता है। बाबा बोलता कितना प्यार से है ओम् शान्ति। बाबा का प्यार तो हम बच्चों को रग रग में मिलता है। अगर बाबा को बाबा समझें, बाबा में निश्चय है, सम्बन्ध पक्का है तो बाबा को देख करके ही प्यार में समा जायेंगे। जब आप बाबा शब्द कहते हो तो मीठा बाबा, प्यारा बाबा कहने के बिना आप रह नहीं सकते। मैं तो समझती हूँ प्यार में कोई फेल नहीं है, सबका बाबा से दिल का प्यार है। ज्ञान और योग के पुरुषार्थ में तो नम्बर हो सकते हैं लेकिन बाबा से प्यार अगर नहीं होता तो आज यहाँ आते क्यों? बाबा ने खास तो आपको बुलाया नहीं लेकिन आप बाबा के प्यार में इतने पहुँच गये हो, यह निशानी क्या है - बाबा से प्यार है तभी तो आये हैं और आने में कुछ मुश्किलातें भी हुई होंगी लेकिन बाबा कहा तो फिर आना ही है, यह दिल का उमंग और उत्साह रहता है।

प्रश्न:- बाबा से जितना प्यार है उतना वो प्यार ज्ञान-योग के पुरुषार्थ में कैसे यूज़ करें? ताकि ज्ञान-योग के पुरुषार्थ में मेहनत न लगे?

उत्तर:- बाबा है कौन? और हमको कितना समय खुद देता है। छोटे बच्चों को ज्यादा प्यार करता है और छोटे बच्चों को ज्यादा पूछता है। पहली बार जो आते हैं बाबा उन्हों को जरुर मिलता है, उनसे हाथ उठवाता है। तो बाबा का बच्चों से प्यार है तब तो उन्हों को ही खास उठवाता है। और आप सबसे भी प्यार है, ऐसे नहीं आप पुराने हो गये तो आपसे प्यार नहीं है। बाबा तो कहता है जिससे प्यार ज्यादा होता है उसके प्रति दिखावा नहीं होता है। लेकिन दिल में ऐसे समा देता है, जैसे मेरे से अलग हैं ही नहीं। हैं ही दिल में, दिल में जो होता है वो भूलना बहुत मुश्किल होता है।

प्रश्न:- तो पुरुषार्थ शब्द यूज़ नहीं करना चाहिए, ऐसे कहें? यह ठीक बात है ना?

उत्तर:- नहीं, पुरुषार्थ शब्द यूज़ करें, क्यों? पुरुषार्थ माना सिर्फ पुरुषार्थ नहीं है, पुरुषार्थ से प्रालब्ध भी सामने लायें। पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो प्रालब्ध कैसे बनेगी और बाबा भी कहता है मुझे आकर्षण वही करता है जो खुद पुरुषार्थ करता है। तो उस पुरुषार्थ में मेहनत नहीं लगेगी लेकिन पुरुषार्थ भी बाबा से मिलन का अनुभव कराये।

प्रश्न:- भगवान हमारे कानों में क्या बातें सुना रहे हैं? और आजकल अव्यक्त बापदादा के जो इशारे हैं, वो खास इशारे क्या हैं? और उस इशारे पर हम कैसे चलते हैं? तो सार रूप में कौन-सी बात आप कहेंगे जो बाबा हमारे कानों में सुना रहे हैं, उन बातों पर हम ध्यान दें तो सब पुरुषार्थ उसमें आ जायेगा?

उत्तर:- बाबा के यह शब्द हमेशा कानों में आते हैं, मीठे बच्चे प्यारे बच्चे तुम मेरे दिल में समाये हुए हो, मैं तेरे दिल में समाया हुआ हूँ। मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे यह जो शब्द बाबा बोलता है वो ऐसा जिगर से बोलता है, जो हर एक बच्चा समझता है कि मेरे से बाबा बात कर रहा है। मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, सिकीलधे बच्चे यह जो शब्द बाबा कहता है, वही प्यार का है। बाबा के दिल में हम समाये हुए हैं तो जो दिल में समाया हुआ होता है, उस दिल में और कोई समा नहीं सकता। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

''मातायें निर्भय और नष्टोमोहा बन बाप समान बनें तो प्रत्यक्षता का झण्डा बुलन्द हो''

हमारा यह निवृत्ति मार्ग नहीं है, प्रवृत्ति मार्ग है। तो ड्रामानुसार चाहे भाईयों, चाहे माताओं को बाबा एक समान ज्ञानामृत का कलश देते। बेहद सेवा के अर्थ शक्तियों व पाण्डवों को निमित्त रखते फिर भी विशेष बाबा ने बहनों माताओं को यह ज्ञानामृत पीने-पिलाने का कलष दे रखा है। दोनों में बाबा कितना बेहद सेवा के निमित्त उमंग-उल्लास भरते। लेकिन फिर भी आज के युग में जो चारों तरफ धर्म नेतायें अथवा साधू-सन्त, महात्मायें-सन्यासी आदि हुए हैं वो सब पुरुष हुए हैं। परन्तु बाबा ने यह सारे कार्य यहाँ हम बहनों के हाथ में दिया है, भाई साथ में हैं। तो शक्तियों को देख मुझे बाबा की वह ललकार की एक लाइन याद आती कि - जागो-जागो शिव की शक्तियाँ, करो कौरवों से जंग... यह बहुत पुराना गीत है।

तो मातायें शिव शक्तियाँ निर्भय हो या कोई भय है? डर है? बहुत करके देखा जाता कि मातायें अबलायें भी होती तो डरपोक भी होती हैं। लेकिन कभी भी डरपोक नहीं रहना, सदैव यह नशा रहे कि हम शक्तियां हैं जिन्हों का आज भी हमारे

भारत में बहुत सारा गायन होता है। दुनिया वाले सदैव कहते आये हैं कि यहाँ बहनों को क्यों आगे रखा गया है। बहनों, माताओं को तो पर्दे के अन्दर ही रहना चाहिए। अरे! कमाल है। हम बहनों ने कभी किसी पुरुष अथवा भाईयों से पूछा है या कोई ऐतराज किया है? नहीं। तो फिर हम भी उनके सम्मुख कुछ ऐसे प्रश्न रखते:-

1) आपने भारत को मातृभूमि क्यों कहा है? पितृ-भूमि क्यों नहीं कहते? आप पुरुष ही गाते हो कि - वन्दे मातरम्। क्यों नहीं पुरुषों के लिये गाया कि - वन्दे पुरुषोत्तम?
2) हमारे भारत में दो बार नवरात्रि आती है। मैं आप लोगों से पूछती आप नवरात्रि में नवदुर्गा, नवशक्तियों का पूजन करते! क्यों नहीं नव पुरुष कोई आये हैं जिसकी पूजा होती?
3) भारत के विद्यालयों में जहाँ तहाँ आपने देखा होगा कि सरस्वती की ही पूजा होती है, न कि कोई पुरुष की, क्यों? विद्या की बड़ी बड़ी डिग्री भाई लोग लेते, फिर भी पूजन सरस्वती का करते कि हे विद्या देवी! हे विद्या देव क्यों नहीं कहने में आता? ब्रह्मा का पूजन नहीं है, सरस्वती का पूजन है।
4) जब मिलेट्री वाले योद्धे लड़ाई के मैदान में जाते हैं तो बहुत करके दुर्गा का पूजन करके जाते, हे दुर्गा शक्ति माँ! हमें शक्ति देना और विजयी बना देना। अरे! लड़ने पुरूष जाते हैं, महावीर वो हैं फिर भी वन्दना माँ की करते हैं, क्यों?
5) धन कमाते पुरुष हैं पर पूजा करते हैं श्री लक्ष्मी की, अरे! श्री नारायण की क्यों नहीं पूजा करते?
6) यह भी गायन है कि जब सागर मंथन हुआ तो उसमें जो अमृत का कलष निकला वह लक्ष्मी को मिला, किसी भाई को क्यों नहीं मिला?

तो कहने का भाव है कि हमारे भारत में नारी का उत्थान हुआ है, जो आज तक भी गाया जाता है। यह भी कहते हैं कि जब मातायें जागेंगी तब जगत का उद्धार होगा।

पुरुषों को भी वरदाता से वरदान है निर्भयता का। निर्भयता में मातायें जरा कमजोर हैं। लेकिन फिर भी माताओं को जो पालनहार कहा गया है, तो प्रैक्टिकल है कि जिस घर में माँ होती है वह पालनहार होती है। पुरुष कमाई करता यह उन्हों की महानता है, परन्तु घर को चलाना, सम्भालना वो मातायें करती हैं। तो ब्रह्मा रचता है जरुर, परन्तु पालनहार विष्णु है, यह भी गायन है। तो माँ परिवार की पालना करती है। घर में कुछ भी होगा तो माँ रात दिन भी जाग करके बच्चों को सम्भालेगी।

तो यहाँ भी बाबा कहते हे मातायें! तुम वास्तव में शिव की शक्तियां हो। परन्तु माताओं में विशेष मोह, ममता बहुत होती है, इसके कारण ही कमजोर होती हैं इसलिए बाबा सबको यह मन्त्र देते कि भगवानुवाच - स्मृतिर्लब्धा नष्टोमोहा। अब यह नष्टोमोहा का मन्त्र सभी के लिए है। जब सभी नष्टोमोहा बनेंगी तब भारत का जयजयकार होगा। वैसे भी माँ सबको प्यारी होती है। माँ प्यार का स्वरूप है लेकिन माँ में जो माया की ममता है, वह राइट नहीं है।

भगवान के लिए भी गाते हैं तुम मात पिता....तो मात-पिता के रूप में जब सबका बाप एक है तो बाकी हम सब बच्चे हैं। उसमें मातायें भी बच्चे हैं, पुरुष भी बच्चे हैं, हम सब बच्चे बच्चियाँ बैठे हैं, तो बाबा कहते ओ मेरी मीठी-मीठी बच्चियां, मेरे मीठे-मीठे प्यारे बच्चे। दोनों के लिए बाबा के पास समानता है। परन्तु जनरल मान्यता है और प्रैक्टिकल भी है - माँ की लोरी गाई जाती है। माँ की जबान मीठी होती, प्यारी होती। तो हम विशेष माताओं को कहती कि घर में मातायें कभी भी लड़ो, झगड़ो नहीं। भगवान की प्रवृत्ति सारी दुनिया से निराली है, सेवा का भी विशेष कलष माताओं, बहनों को दिया है। तो मीठे बाबा की यह कमाल है। और मीठा बाबा सब प्रकार से ऊंचे से ऊंचा बनाता है। तो यह भी वरदान हमारी बहनों को मिला तो यह कितनी खुशी और भाग्य की बात है।

अभी हमें बहनों को तीन बातें कहनी हैं। एक तो कोई भी बात छोटी बड़ी होगी तो रोना शुरू कर देती हैं, जो राइट नहीं है। बाबा कहते रोना विधवा का काम है। दूसरा - हर छोटी बात में तू तू करके लड़ना शुरू करती हैं। तो आपस में कभी लड़ना झगड़ना नहीं है क्योंकि इससे अशान्ति फैलती है। तीसरा - सम्पूर्णता की समीपता का सर्टीफिकेट लो। तो हम सबको मिल करके यह दृढ़ संकल्प करना है कि हमें सम्पन्नता के समीप आना है, ऐसा लक्ष्य रखके लक्षण धारण करो तो जरुर जो बाबा की प्रेरणा है, जब आप सम्पन्न बनो तभी प्रत्यक्षता हो। तो इस प्रत्यक्षता का नारा बहनों द्वारा बुलन्द होगा, यह शिव की शक्तियां शिव को प्रत्यक्ष करेंगी, इसलिए खास बहनों को कहती हे शिव की शक्तियां! जब आप पक्की शक्ति रूप बनेंगी तब जग का कल्याण होगा अथवा बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनेंगी। तो यह मन्त्र लेके जाना है।

सम्पन्न बनना माना बाप समान फरिश्ता बनना, इसके लिये अन्तर्मुखी बनना है, तो आप सब बहनें उसका उदाहरण बनके जायेंगी। उसके लिये इनएडवान्स बापदादा की तरफ से सबको धन्यवाद।